pruk fodkl eY; f'k{kk vk/kkfjr
f} o"kh; fMIykek ikBØe

mís'; %&

1. सर्वसुलभ स्वावलम्बी शिक्षा उपलब्ध कराना।
2. सार्वभौम मानवीय आचरण सम्पन्न मानव (ग्लोबल सिटिजन) तैयार करना।
3. मानवीय शिक्षा से समग्र विकास (अखण्ड समाज – सार्वभौम व्यवस्था)।

L=kr %&

मध्यस्थ दर्शन (सह–अस्तित्ववाद)
प्रणेता एवं लेखक – श्री ए. नागराज जी

iLrqrdrk

मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युदय संस्थान), कुम्हारी धमधा मुख्य मार्ग पर
जिला – दुर्ग (छ. ग.)

Hkfedk

विज्ञान शिक्षा से छात्र–छात्राओं एवं युवाओं में तर्कशक्ति का अभूतपूर्व विकास हुआ है। जिससे आस्था (बिना जाने मान लेना) की प्रवृत्ति में कमी आयी है। अतः परम्परागत शैली जिसमें यह करो यह न करो अथवा ''ऐसा जीना चाहिए'' आदि उपदेश विद्यार्थियों में अब प्रभावशाली सिद्ध नहीं हो पा रहे हैं। ऐसे में परिवारोन्मुखी, समाजोन्मुखी शिक्षा का सार्वभौम स्वरूप पर चिंतन की आवश्यकता है।

यूनेस्को (UNESCO) द्वारा अपेक्षित शिक्षा के चार स्तम्भों में मुख्य स्तम्भ Learning to live together अर्थात् ''साथ–साथ जीना सीखना'' पर जोर दिया है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार ने मानव मूल्य शिक्षा हेतु निम्न मार्गदर्शन दिया है :–

1. पाठ्यक्रम किसी भी प्रकार के अंधविश्वास, कर्मकाण्ड व पूजन पद्धति से मुक्त हो।
2. पाठ्यक्रम रहस्यवाद, सम्प्रदायवाद व व्यक्तिवाद से मुक्त हो।
3. पाठ्यक्रम ''करो, न करो'' आदि उपदेश न होकर तर्कपूर्ण, तर्कपूर्ण ढंग से इसका प्रयोग एवं विश्लेषण द्वारा परीक्षण कर सकते हो।
4. पाठ्यक्रम को आचरण में प्रमाणित किया जा सकता हो।
5. पाठ्यक्रम दर्शन आधारित हो।

आधुनिक शिक्षा को रोजगारोन्मुखी ही नहीं बल्कि परिवारोन्मुखी, समाजोन्मुखी भी होने की आवश्यकता है, ताकि हर परिवार समृद्धिपूर्वक जी सके। समाधान का अर्थ मानव संबंधों में परस्पर तृप्ति एवं प्रकृति के साथ संतुलन पूर्वक जीना है। समृद्धि अर्थात् अभाव–मुक्त जीना इस आशा की पूर्ति के लिए मानवीय मूल्यों के शिक्षक की आवश्यकता महसूस की जाती रही है।

मध्यस्थ दर्शन (सह–अस्तित्ववाद) उपरोक्त सभी कसौटियों को पूरा करता है, जिसका परिचय ''जीवन विद्या शिविरों'' के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। मध्यस्थ दर्शन से विस्तृत चेतना विकास मूल्य शिक्षा मानव में पाँच सद्गुणों को सुनिश्चित करती है :–

1. स्वयं में विश्वास
2. श्रेष्ठता का सम्मान
3. प्रतिभा एवं व्यक्तित्व में संतुलन
4. व्यवसाय में स्वावलम्बन
5. व्यवहार में सामाजिकता

आज धरती एक गाँव (Global Village) हो गयी है। अतः विश्व शांति हेतु वैश्विक नागरिक (Global Citizen) अर्थात् सार्वभौम मानवीय आचरण को पहचानने की आवश्यकता है। चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रकाश में सार्वभौम मानवीय आचरण, सार्वभौम मानवीय शिक्षा, सार्वभौम मानवीय व्यवस्था, सार्वभौम मानवीय संविधान का

व्यावहारिक स्वरूप व्याख्यायित होता है। साथ ही ''मानव में समानता'' पूर्वक जीने की राह प्रशस्त होती है।

अतः ऐसी शिक्षा पद्धति की आवश्यकता है जिससे परिवार से लेकर विश्व में कहीं भी मानव विश्वासपूर्वक जी सके। ऐसी ही शिक्षा को मानवीय शिक्षा अथवा चेतना विकास मूल्य शिक्षा कहा गया है। यह मध्यस्थ दर्शन (सह–अस्तित्ववाद) से निःसृत है। मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद की परिचयात्मक प्रस्तुति जीवन विद्या शिविर है। न्यूनतम एक सात दिवसीय शिविर के बाद ही मानव चेतना के उस धरातल से परिचित हो पाता है जिस पर खड़े होकर ये बातें हो रही हैं।

vr% ,slk cgqr lEHko gS fd thou fo|k f'kfoj fd;s fcuk ;fn dksbZ bl iqLrd dks i<rk gS vFkok lqurk gS mls cgqr lkjh ckrsa vO;ogkfjd yx ldrh gSA blfy, vuqjks/k gS fd ,slh fLFkfr esa ;g lksps fd ,Lkk gksus dh vko';drk gS ;k ugha\ ;fn vko';drk gS rks O;ogkfjd dSls gksxk\ bl gsrq U;wure ,d lkr fnolh; f'kfoj vko';d gSA

Pkruk fodkl eY; f'k{kk dh vko';drk

1- 20 वर्ष की शिक्षा भी यदि बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, प्रदूषण, गरीबी–अमीरी में दूरी, आतंकवाद, नक्सलवाद, स्त्री–पुरुष में असमानता, मिलावट व अन्य आपराधिक गतिविधयाँ समाज में परिलक्षित होती हैं तो शिक्षा की विषयवस्तु, पद्धति एवं प्रणाली पर शिक्षाविदों, शिक्षकों एवं चिंतकों को पुर्नविचार की आवश्यकता है।

2- वर्तमान में मानव का व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, अन्तर्राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धताओं के साथ–साथ सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक व राज्यनैतिक कर्तव्यों तथा दायित्वों में बदलाव के आलोक में शिक्षा क्षेत्र में बदलाव की आवश्यकता NCF-2005, NCTE Draft Curricular Framework-2006, NCTECF-2009, Teacher Development and Management Conference Report-2009, UNESCO आदि में व्यक्त की गई है, जिसे प्रधानतः शिक्षा से कामना और अपेक्षा के रूप में देखा जा सकता है।

Pkruk fodkl eY; f’k{kk d ey vo/kkj.kk,

1- निरिक्षण, परीक्षण एवं सर्वेक्षण से यह समझ में आता है कि प्रकृति में हर इकाई स्वयं में व्यवस्था है एवं समग्र व्यवस्था में भागीदार है।

2- अतः सह–अस्तित्व (सम्पूर्ण प्रकृति) स्वयं में व्यवस्था है तथा मानव के अलावा सभी इकाईयां व्यवस्थित हैं।

3- अव्यवस्थित मानव के आचरण से परिवार, समाज व प्रकृति में अव्यवस्था है।

4- हर मानव व्यवस्थित होना चाहता है क्योंकि हर बालक जन्म से न्याय का याचक, सत्यवक्त व सही कार्य–व्यवहार पूर्वक जीना चाहता है।

5- हर बालक जन्म से ही जिज्ञासु होता है, एवं समझने की असीम क्षमता सभी में समान रूप से उपलब्ध है।

pruk fodkl eY; f’k{kk&uhfr dk iLrko

यह प्रस्ताव अभ्युदय अर्थात् सर्वतोमुखी विकास के संदर्भ में है, जिसका प्रत्यक्ष रूप प्रतिभा एवं व्यक्तित्व का संतुलित उदय है। चेतना विकास मूल्य शिक्षा का आधारभूत मध्यस्थ दर्शन, विकास के क्रम में वास्तविकताओं के आधार पर निःसृत जीवन दर्शन है जिसमें प्रचलित–

द्वन्दात्मक भौतिकवाद के स्थान पर समाधानात्मक भौतिकवाद
संघर्षात्मक जनवाद ″ ″ ″ व्यवहारात्मक जनवाद
रहस्यात्मक अध्यात्मवाद ″ ″ ″ अनुभवात्मक अध्यात्मवाद
लाभोन्मादी अर्थशास्त्र ″ ″ ″ आवर्तनशील अर्थशास्त्र
कामोन्मादी मनोविज्ञान ″ ″ ″ मानव संचेतनावादी मनाविज्ञान
भोगोन्मादी समाजशास्त्र ″ ″ ″ व्यवहारवादी समाजशास्त्र
प्रतिपादित हुआ है।

यह भौतिक समृद्धि एवं बौद्धिक समाधान को बोधगम्य कराता है, जिससे मानव में अभ्युदय होता है अर्थात् सर्वतोमुखी विकास मानवीय परम्परा के अर्थ में प्रमाणित होता है एवं सर्व मानव लक्ष्य साकार होता है।

सर्व मानव लक्ष्य–

1.	मानव में समाधान	शिक्षा–संस्कार के द्वारा सभी मानव में (स्वयं के प्रति विश्वास की निरन्तरता अर्थात् भूतकाल की पीड़ा, वर्तमान से विरोध एवं भविष्य की चिन्ता से मुक्ति)
2.	परिवार में समाधान	(शिकायत मुक्त संबंध अथवा संबंधों में विश्वास)
	एवं समृद्धि	(समाधान के प्रकाश में भौतिक आवश्यकताओं का निश्चित होना उत्पादन पूर्वक आवश्यकता से अधिक के भाव में जीना) अर्थात् अभाव मुक्त परिवार

3. समाज में समाधान, समृद्धि एवं अभय (समाधान समृद्धि पूर्वक जीते हुए परिवार का परस्पर विश्वास पूर्वक जीना)

4. प्रकृति में समाधान, समृद्धि, अभय एवं सह–अस्तित्व (प्रकृति में संतुलन बने रहना ताकि धरती पर हमेशा मानव के प्रमाणित होने के लिए अवसर उपलब्ध रहे)

मानव लक्ष्य साकार होना ही शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं अध्यात्मिक विकास का प्रमाण है। यही शिक्षा का उद्देश्य है।

ekuo e lkr lnx.kk dk fodkl

चेतना विकास मूल्य शिक्षा के अध्ययन में मानव, अभिभावक व शिक्षक एवं समाज द्वारा अपेक्षित सात निम्न गुणों का विकास होता ही है। जिसके आधार पर मानव में आचरण की सुनिश्चितता एवं परस्परता में जीने का सार्वभौम आधार उपलब्ध होता है ताकि मानव लक्ष्य साकार हो सके :–

1- स्वयं के प्रति विश्वास

2- श्रेष्ठता के प्रति सम्मान करने में विश्वास

3- स्वयं की प्रतिभा में विश्वास

4- स्वयं की प्रतिभा के अनुरूप व्यक्तित्व के संतुलन में विश्वास

5- व्यवहार में सामाजिक

6- उत्पादन (व्यवसाय) में स्वावलंबन

1- vk/kkj&

1.1 यह प्रारूप मध्यस्थ दर्शन आधारित है। यह दर्शन चार भागों में है–

- मानव–व्यवहार–दर्शन

- मानव–कर्म–दर्शन
- मानव–अभ्यास–दर्शन
- मानव–अनुभव–दर्शन

2- iorlu dkj.k&

2.1 वर्तमान में मनुष्य में पाई जाने वाली सामाजिक (धार्मिक), आर्थिक एवं राज्यनैतिक विषमताएं ही समरोन्मुखता हैं।

3- iLrkouk&

3.1 मानवीयता की सीमा में सामाजिक (धार्मिक), आर्थिक, राज्यनैतिक समन्वयता रहेगी, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य प्राप्त अर्थ का सदुपयोग एवं सुरक्षा चाहता है अस्तु अर्थ की सदुपयोगात्मक नीति ही धर्म नीति, सुरक्षात्मक नीति ही, राज्यनीति है और साथ ही अर्थ के सदुपयोग के बिना सुरक्षा एवं सुरक्षा के बिना सदुपयोग सिद्ध नहीं है। इसी सत्यतावश मानव धार्मिक–आर्थिक राज्यनैतिक पद्धति व प्रणाली से सम्पन्न होने के लिये बाध्य है।

4. mís';&

4.1 मानवीयता पूर्ण जीवन को स्थापित करना।

4.2 मानवीयता की अक्षुण्यता हेतु मानवीय संस्कृति, सभ्यता तथा उसकी स्थापना एवं संरक्षण हेतु विधि व व्यवस्था का अध्ययन कराना है इससे मनुष्य के चारों आयामों (व्यवसाय, व्यवहार विचार एवम् अनुभूति) तथा पांचों स्थितियों (व्याक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं अन्तराष्ट्र) की एक सूत्रता, तारतम्यता एवं अनन्यता प्रत्यक्ष हो सकेगी। फलस्वरूप समाधानात्मक भौतिकवाद, व्यवहारात्मक जनवाद एवं अनुभवात्मक अध्यात्मवाद मनष्य जीवन में चरितार्थ एवं सर्वसुगम हो सकेगा। यही प्रत्येक मनुष्य की प्रत्येक स्थिति में बौद्धिक समाधान एवं भौतिक समृद्धि है और साथ ही यह मानव का अभीष्ट भी है।

4.3 व्यक्तिव एवं प्रतिभा में संतुलित उदय हो पाना।

4.4 समस्त प्रकार की वर्ग भावनाओं को मानवीय चेतना में परिवर्तन करना।

4.5 सह–अस्तित्व एवं समाधानपूर्ण सामाजिक चेतना को सर्वसुलभ करना।

4.6 प्रत्येक व्यक्ति जन्म से ही न्याय का याचक है एवं सदा करना चाहता है उसमें न्याय प्रदायी क्षमता तथा सही करने की योग्यता प्रदान करना।

4.7 प्रत्येक मनुष्य जीवन में अनिवार्यता एवं आवश्यकता के रूप में पाये जाने वाले बौद्धिक समाधान एवं भौतिक समृति की समन्वयता को स्थापित करना।

4.8 शिक्षा प्रणाली, पद्धति एवं व्यवस्था की एक सूत्रता को मानवीयता की सीमा में स्थापित करना।

4.9 प्रकृति के विकास एवं इतिहास के अनुषंगिक मनुष्य, मनुष्य–जीवन, लक्ष्य, जीवनीक्रम तथा जीवन के कार्यक्रम को स्पष्ट तथा अध्ययन सुलभ करना।

4.10 विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, विद्यालय शाला एवं शिक्षा मन्दिरों की गुणात्मक एकता एवं एक–सूत्रता को स्थापित करना।

4.11 उन्नत मनोविज्ञान के संदर्भ में निरन्तर शोध एवं अनुसंधान व्यवस्था को प्रस्थापित करना।

4.12 प्रत्येक विद्यार्थी और व्यक्ति को अखण्ड समाज के भागीदार के रूप में प्रतिष्ठित करना।

4.13 शिक्षक, शिक्षार्थी एवं अभिभावक की तारतम्यता को व्यवहार शिक्षा के आधार पर स्थापित करना।

4.14 विगत वर्तमान एवं आगत पीढ़ी की परस्परता के प्रत्येक स्तर में तारतम्यता, एक–सूत्रता, सौजन्यता, सहकारिता, दायित्व तथा कर्तव्यपालन योग्य क्षमता का निर्माण करना।

4.15 मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि एवं व्यवस्था सम्बन्धी शिक्षा को सर्वसुलभ बनाना।

4.16 प्रत्येक मनुष्य में अधिक उत्पादन एवं कम उपभोग योग्य क्षमता को प्रस्थापित करना।

4.17 व्यक्तित्व व प्रतिभा सम्पन्न स्थानीय व्यक्तियों के सम्पर्क में शिक्षार्थी एवं शिक्षकों को लाने की व्यवस्था प्रदान करना।

5 *dk{kk &*

5.1 वर्तमान बिन्दु में वास्तविकताएं यह स्पष्ट करती हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को ऐसी न्यूनतम बुनियादी शिक्षा प्राप्त हो जिससे मानवीयता की सीमा में व्यक्ति की स्वतंत्रता, स्वत्व, अधिकार, सामाजिक दायित्व एवं कर्तव्य–क्षमता को स्थापित कर सके ताकि स्वयक्तित्व और प्रतिभा का संतुलित उदय हो सके। इसके फलस्वरूप सामाजिक समानता, अधिक उत्पादन, कम उपभोग

पूर्वक अर्थ–विषम प्रभाव का उन्मूलन होगा और साथ ही प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक अभ्युदय में भागीदार हो सकेगा।

6 uhfr &

6.1 शिक्षा प्रणाली एवं पद्धति राष्ट्रीय सीमावर्ती रहेगी।

6.2 जाति, वर्ग एवं सम्प्रदाय विहीन अखण्ड समाज को पाने के लिये सार्वभौमिक सामाजिक, (धार्मिक) आर्थिक एवं राज्यनैतिक नीति रहेगी।

6.3 नियति क्रम में पायी जाने वाली प्रकृति के विकास एवं इतिहास में मानव जीवन, जीवनीक्रम एवं जीवन के कार्यक्रम को अनुसरण करने वाली नीति रहेगी, जो समाधानात्मक भौतिकवाद, व्यवहारात्कम जनवाद एवं अनुभवात्मक अध्यात्मवाद पर आधारित है।

6.4 प्राकृतिक एवं वैकृतिक ऐश्वर्य के सम्पत्तिकरण नीति के स्थान पर साधनीकरण करने वाली नीति रहेगी।

6.5 ग्रामीण एवं शहरी जीवन की दूरी मिटाने वाली, ग्रामीण जीवन में जो दयनीय भावनायें हैं उसे समाप्त करने वाली एवं ग्रामीण जीवन के प्रति गौरव एवं अनिवार्यता को स्थापित करने वाली निति रहेगी।

6.6 शिक्षा में औपचारिकता गौण रहेगी, उसके स्थान पर प्रयोगिकता एवं व्यवहारिकता प्रधान शिक्षा नीति रहेगी।

7 oLrq fo"k; i.kkyh &

7.1 शिक्षा के सभी विषयों को सभी स्तरों में उद्देश्य की पूर्ति हेतु बोधगम्य एवं सर्वसुलभ बनाने, सार्वभौम नितित्रय (धार्मिक, आर्थिक, राज्यनैतिक) में द्दढ़ता एवं निष्ठा स्थापित करने तथा वर्तमान में पढ़ाये जाने वाले प्रत्येक विषय को सुगमता से सम्बन्ध रहने के लिये –

क–विज्ञान के साथ चैतन्य पक्ष का।

ख–मनोवज्ञान के साथ संस्कार पक्ष का।

ग–दर्शनशास्त्र के साथ क्रिया पक्ष का।

घ–अर्थशस्त्र के साथ प्राकृतिक एवं वैकृतिक ऐश्वर्य की सदुपयोगात्मक एवं सुरक्षत्मक नीति पक्ष का।

च–राज्यनीति शास्त्र के साथ मानवीयता के संरक्षणात्मक तथा संवर्धनात्मक नीति पक्ष का।

छ–समाज शास्त्र के साथ मानवीय संस्कृति व सभ्यता पक्ष का।

ज–भूगोल व इतिहास के साथ तथा मानवीयता का।

झ–साहित्य के साथ तात्विक पक्ष का अध्ययन अनिवार्य है क्यांकि इसके बिना इसकी पूर्णता सिद्ध नहीं होती।

7.2 इतिहास में उन मौखिक घटनाओं और प्रेरणाओं को वरीयता के रूप में अध्ययन करने की व्यवस्था रहेगी जो मानवीयता पूर्ण जीवन के लिये प्रेरणादायी होगी।

7.3 शिक्षा के द्वारा उस वस्तु एवं विषय का प्रबोधन किया जायेगा जिसका प्रत्यक्ष रूप व्यवहार, व्यवसाय एवं व्यवस्था होगी।

8 i)fr&

8.1 प्रयोग, व्यवहार एवं अनुभव पूर्वक सिद्ध होने वाली शिक्षा प0ति रहेगी।

8.2

9 f'k{kk dh lexrk&

9.1 शिक्षा की पूर्णता केवल निपुणा, कुशलता एवं पांडित्य में ही है, जो आर्थिक धार्मिक राज्यनीति को स्पष्ट करती है।

9.2 इसके अतिरिक्त शिक्षा के स्वत्व में एक ऐसी व्यवस्था रहेगी जिसमें साहस, शौर्य एवं प्रतिभा को पुरस्कार तथा पारितोषिक पूर्वक प्रोत्साहित करने का प्रावधान रहेगा और साथ ही इन सबका मानवीयता की सीमा में उपादेयी सिद्ध होना अनिवार्य होगा।

pruk fodkl eY; f'k{kk vk/kkfjr
f} o"khZ; fMIykek ikB~Øe
v/;;u dh fo"k; oLrq

1. जीवन विद्या (चेतना विकास मूल्य शिक्षा) शिविर
2. विकल्प
3. अध्ययन बिन्दु
4. जीवन विद्या एक परिचय
5. *n'ku*
    1. मानव–व्यवहार–दर्शन
    2. मानव–कर्म–दर्शन
    3. मानव–अभ्यास–दर्शन
    4. मानव–अनुभव–दर्शन
6. *okn*
    1. समाधानत्मक भौतिकवाद
    2. व्यवहारात्मक जनवाद
    3. अनुभवात्मक अध्यात्मवाद
7. *'kkL=*
    1. मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान
    2. व्यवहारवादी समाजशस्त्र
    3. आवर्तनशील अर्थचिंतन
8. *vU;*
    1. मानवीय संविधान का प्रारूप
    2. परिभाषा संहिता
9. *;kstuk*
    1. जीवन विद्या योजना
    2. मानव संचेतनावादी शिक्षा–संस्कार योजना
    3. परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था योजना

pruk fodkl eY; f’k{kk vk/kkfjr
f} o"khZ; fMIyksek ikBØe

ikBe o"kZ dk v/;;u dh fo"k; oLrq&

1. *fodYi*
   - *'दर्शन' – 'क्यों', 'कैसे' का उत्तर प्राप्त होता है।*
   - *सत्य से मिथ्या कैसे इसका उत्तर मिलता है।*

2. *v/;;u fcUnq*
   - *सम्पूर्ण अध्ययन की विषय वस्तु बिन्दुवार इंगित होता है।*
   - *प्रस्तुत 44 बिन्दुओं में स्पष्टता आने से हम अच्छा बात कर सकते हैं।*
   - *हम सही और अच्छा सोच सकते हैं।*
   - *तथा हम सही और अच्छा जी सकते हैं।*

3. *thou fo|k ,d ifjp;*
   - *जीव जगत प्रगटनशील है, उत्पन्नशील, निर्माणशील नहीं है। यह इंगित होता है।*
   - *मूल भ्रूण पदार्थावस्था में है। फिर प्राण, जीव व मानव शरीर का प्रगटन है।*
   - *पदार्थावस्था, गठनशील परमाणु से रासायनिक क्रिया पूर्वक वनस्पति संसार और मानव शरीर*
   - *शिक्षा की सम्पूर्ण विषय वस्तु तथा उसकी आवश्यकता इंगित होता है।*
   - *मानव लक्ष्य इंगित होता है और जीने का मॉडल स्पष्ट होता है।*

1- n’kZu

1. *ekuo&0;ogkj&n’kZu*
   - चेतना विकास में मानव व्यवहारदर्शन का अध्ययन कराना होता है जिसमें अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था का बोध, इसकी आवश्यकता बोध कराया जाता है।
   - मानव व्यवहार में प्राकृतिक नियम, बौद्धिक नियम और सामाजिक नियमों को बोध कराने की व्यवस्था रहती है।
   - जिससे समाज की सुदृढ़ता, वैभव पर्णता का बोध कराया जाता है।
   - फलस्वरूप हर मानव अखंड समाज के अर्थ में अपने आचरणों को प्रस्तुत करना प्रमाणित होता है।
   - इस प्रकार ऐसे अखंड समाज के अर्थ में सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी स्वयं स्फूर्त विधि से सम्पन्न होना होता है।

- यही स्वतंत्रता और स्वराज्य का प्रमाण है।
- अस्तु संवाद का मुद्दा है अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में जीना चाहिये या समुदाय गत राज्य के अर्थ में जीना चाहिये।
- *मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना दृष्टि, स्वभाव, प्रवृत्ति की भरपाई करना।*
- *चेतना के चार स्तर– जीव, मानव, देव, दिव्य पर दृष्टि, स्वभाव, प्रवृत्ति।*
- *स्वयं सत्यापित करना की कौन सी चेतना में जीना चाहते हैं।*
- *fo"k; oLrq& सह–अस्तित्व; कृतज्ञता; सृष्टि–दर्शन; मानव सहज प्रयोजन; विर्भ्रमता ही विश्राम; कर्म एवं फल; मानवीय व्यवहार; पद एवं पदातीत; दर्शन–दृश्य–दृष्टि; क्लेश–मुक्ति; योग; लक्षण, लोक, आलोक एवं लक्ष्य; मानवीयता; मानव व्यवहार सहज नियम; मानव सहज न्याय; पोषण एवं शोषण– मानव धर्म नीति, मानव राज्य नीति; रहस्य–मुक्ति; सुख–शान्ति–संतोष और आनन्द।*

2. *ekuo&deZ&n’kZu*

- मानवीय शिक्षा में कर्म दर्शन का अध्ययन कराया जाता है।
- जिसमें कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमादित भेदों से हर मानव को कर्म करने की सत्यता को बोध कराया जाता है।
- इससे मानव का विस्तार समझ में आता है।
- इससे स्वयं में विश्वास का आधार बनता है।
- मानसिक रूप में जितनी भी क्रियाएँ होती हैं वे सब कायिक और वाचिक विधि से कार्यरूप में परिणित होती हैं।
- फलस्वरूप उसका फल परिणाम होता है फल परिणाम के आधार पर समाधान या समस्या का होना पाया जाता है।
- जगृत परम्परा में किसी भी प्रकार की समस्या का कायिक या वाचिक विधि से निराकरण स्वयं से ही निष्पन्न होना पाया जाता है।
- इस तरह से स्वायत्तता का प्रमाण मिलता है। स्वायत्तता अपने में सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्नता ही है। जहाँ जहाँ भी दोष देखने को मिलेगा उसका निराकरण स्वयं में ही हो जाने को स्वायत्तता बताई गयी है।
- कार्य का स्वरूप नौ प्रकार से बताया गया है। यह उत्पादन कार्य, व्यवहार कार्य और व्यवस्था कार्य में प्रमाणित होना देखा गया है। सभी कार्य इन तीन तरीकों से ही सम्पन्न होना देखा गया है।
- इन सभी कार्यों का उद्देश्य एक है, मानवाकांक्षा को सफल बनाना।
- यही मानव लक्ष्य के आधार पर कर्म तंत्र, व्यवहार तंत्र, समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने का तंत्र, ये तीनों तंत्र मानव लक्ष्य को प्रमाणित करना ही है। इसी का नाम कर्म दर्शन है।
- कर्म दर्शन का सम्पूर्ण स्वरूप अपने में मानव जितने प्रकार के कार्य करता है, उसकी सार्थकता क्या है, कैसे किया जाये। इन तीनों विधा में अध्ययन कराता है।

- इससे मानव जाति मार्गदर्शन पाने की अथवा व्यवस्था में जीने की प्रेरणा पाना एक देन है। अतएव कायिक, वाचिक, मानसिक क्रियाकलापों में संगीतमयता की आवश्यकता पर एक अच्छा संवाद हो सकता है।

- मानव की सम्पूर्ण संवेदनाएँ अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध के रूप में पहचानी जाती है जिसे हर सामान्य व्यक्ति पहचानता है। इसके नियंत्रण के लिए सम्पूर्ण ज्ञान, दर्शन, आचरण को संजो लेने का प्रमाण प्रस्तुत करना ही अभ्युदय समाधान है।

- इसका मुद्दा यही है कि कायिक, वाचिक, मानसिक रूप में एकरूपता चाहिये या नहीं। यदि चाहिये तो मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद में पारंगत होना आवश्यक है।

- *चार अवस्थओं का कर्म स्पष्ट होना। उसमें विश्वास होना। फलस्वरूप मानव अपने कर्म में निष्ठान्वित होना।*

- *fo"k; oLr|& कर्म; उपासना विवके; सह–अस्तित्ववादी विज्ञान– परमाणु संरचना एवं अणु रचना; विकाक्रम, विकास; परमाणु में विकास; मनःस्वस्थता का स्वरूप; सह–अस्तित्व स्थिर है, विकास और जागृति निश्चित है; अनुभव और जागृति की स्थिरता और निश्चयता; ऊष्मा और धरती का संतुलन; स्थिति–गति; मात्रा; गुण; बल–शक्ति (स्थिति–गति); परावर्तन–प्रत्यावर्तन; दबाव, प्रवाह, तरंग, विद्युत चुम्बकीय बल; देश, दिशा, दूरी, विस्तार आयाम, कोण; काल; प्राणावस्था, मानव शरीर और जीवन के संयुक्त रूप में मानव; ज्ञान–ज्ञाता–ज्ञेय; दृष्टा, कर्त्ता, भोक्ता।*

3. *ekuo&vH;kl&n’ku*

- मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद के अनुसार अभ्यास दर्शन सर्वमानव के लिये अध्ययन के अर्थ में प्रस्तुत है।

- अभ्यास दर्शन अपने में कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित क्रियाकलापों में सार्थकता का प्रतिपादन है।

- 'अभ्यास दर्शन' समझदारी के लिए अभ्यास को स्पष्ट करता है। एवं समझने के उपरान्त समझदारी को प्रमाणित करने की अभ्यास विधियों का अध्ययन कराता है।

- अध्ययन होने का प्रमाण अनुभव मूलक विधि से प्रमाणित होने का प्रतिपादन है।

- अनुभव सह–अस्तित्व में होने का स्पष्ट अध्ययन करा देता है, बोध करा देता है। इससे मानव परम्परा में प्रमाणित होने का मार्ग प्रशस्त होता है।

- इसमें जीवन समुच्चय का और दर्शन समुच्चय का आशय सुस्पष्ट हो जाता है।

- जीवन समुच्चय अपने में दृष्टा पद प्रतिष्ठा सहित कर्ता–भोक्ता पद में प्रमाणित होने का बोध होता है।

- सम्पूर्ण अस्तित्व ही जीवन के लिए दृष्य रूप में प्रस्तुत रहता है। सम्पूर्ण दृष्य व्यवस्था के रूप में व्याख्यायित है। नियम–नियंत्रण–संतुलन ही इसका सूत्र है।

- नियम की व्याख्या सह–अस्तित्व रूपी अस्तित्व में प्रत्येक एक एक की यथास्थिति के आधार पर निश्चित आचरण ही व्याख्या है।

- ऐसा निश्चित आचरण ही हर इकाई का त्व है। ऐसी यथा स्थितियाँ और आचरण परिणामानुषंगी विधि से, बीजानुषंगीय विधि से स्पष्ट होता हुआ देखने को मिलता है। अभ्यास दर्शन ऐसी स्पष्टता को स्पष्ट रूप में अध्ययन करा देता है।
- सभी स्पष्टताएँ नियम, नियंत्रण, सन्तुलन से गुथी हुई के रूप में होना पाया जाता है। इस भौतिक रासायनिक रूपी बड़ छोटे रूप में होना पाया जाता है।
- होना ही अस्तित्व है। मानव भी जड़ चैतन्य प्रकृति के रूप में होना अध्ययनगम्य है।
- इसी आधार पर चैतन्य प्रकृति में दृष्टा पद प्रतिष्ठा होना, इसके वैभव में ही दृष्टा–कर्ता–भोक्ता पद का प्रमाण प्रस्तुत करना ही जागृति का प्रमाण है। अभ्यास दर्शन इन तथ्यों को अध्ययन कराता है।
- इसमें मुद्‌दा यही है कि हमें सम्पूर्ण अध्ययन करना है तो मध्यस्थ दर्शन ठीक है।
- *मानव व्यवहार दर्शन और कर्म दर्शन के शोध की विधि है।*
- *जांच सकेंगे कि हम पारंगत हुए कि नहीं। या हम कहाँ तक पहुँचे।*
- *fo"k; oLr& अभ्यास –दर्शन; अभ्यास व अभ्युदय की अनिवार्यता; सामाजिकता की अनिवार्यता, अध्ययन व आचरण; स्थापित मूल्यों की अनिवार्यता सर्वदा सबके लिए समान; जनाकाँक्षा को सफल बनाने योग्य शिक्षा व व्यवस्था; समाज व्यवस्था; मानव संस्कृति; व्यक्तित्व एवं प्रतिभा का संरक्षण की अर्थ का संरक्षण; न्याय पान, सही करना ही साम्यतः जनाकाँक्षा; सतर्कतापूर्ण जीवन में मानवीयता की चरितार्थता; भ्रमित समाज की द्वितीयावस्था ही वर्ग; लाभ उत्पादन नहीं; विनिमय मानव जीवन में अनिवार्य प्रक्रिया; ईश्वर–तंत्र पर आधारित राज्य–नीति एवं धर्म नीति रहस्यता से मुक्त नहीं; प्रत्येक मानव इकाई भय मुक्ति के लिए प्रयासरत; आचरण पूर्णता तक शिक्षा का अभाव नहीं; केवल साधनों की प्रचूरता मानवीयता को स्थापित करने में समर्थ नहीं; विकास व जाग्रति ही क्रम; प्रत्येक मनुष्य समाजिकता के लिए समर्पित; कम्पनात्मक एवं वर्तुलात्मक गति का वियोग नहीं; प्रत्येक उदय का भास–आभास संवेदनशीलता की ही क्षमता है और प्रतीति व अनुभूति संज्ञानीयता की महिमा; आवेश मनुष्य का अभीष्ट नहींद्ध मनुष्य में संचेतनशीलता ही संस्कार एवं जागग्रतिशीलता है; समाजिकता का आधार संस्कृति एवं सभ्यता; जिज्ञासात्मक एवं आवेशात्मक पीड़ाएं प्रसिद्ध हैं; मनुष्य में वर्गविहीनता जन्म से ही द्रष्टव्य; मानव में अखण्डता के लिए मानसिकता ही एकमात्र शसरण; मानवीयतापूर्ण जीवन 'में, से, के लिए' सुसंस्कारों का अभाव नहीं; संस्कार ही संस्कृति को प्रकट करता है; केवल उत्पादन ही मनुष्य के लिए जीवन सर्वस्व नहीं; मनुष्य के संपूर्ण संबंध गुणात्मक परिवर्तन के लिए सहायक; कुशलता, निपुणता एवं पांडित्य ही ज्ञानावस्था की मूल पूँजी; समाधान, समृद्धि, अभय एवं सह–अस्तित्व में अनुभव मानव धर्म की पार्थीवता है; व्यक्ति का व्यक्तित्व न्याय प्रदायी क्षमता से प्रदर्शित; संपूर्ण अध्ययन अनुभूति, समाधान, सह–अस्तित्व एवं समृद्धि के लिए ही है; मनुष्य का संपूर्ण कार्यक्रम धार्मिक, आर्थिक एवं राज्यनीति में, से, के लिए है; पांडित्य ही मनुष्य में विशिष्टता है; समाज संरचना का आधार ''मूल्य–त्रय'' ही है; भोगों में संयमता से अभयतापूर्ण जीवन प्रत्यक्ष होता है; समस्त प्रकार के वर्ग की एकमात्र शरण स्थली मानवीयता ही है; अभयता का प्रत्यक्ष रूप ही विश्वास; आवेश मनुष्य की स्वभव गति नहीं; प्रत्येक स्थिति में किए गए अभ्यास का प्रत्यक्ष रूप ही व्यवहार एवं उत्पादन है; व्यक्तित्व और प्रतिभा की चरमोत्कर्षता में प्रेमानेभूति; उत्पादन एवं व्यवहारिकता समाज ''में, से, के लिए'' अपरिहार्य;*

प्रमाण–त्रय'' ही विश्वास; मनुष्य में स्थूल व सूक्ष्म भेद से क्रियाशीलता प्रसिद्ध है; अभ्यास–समग्र की उपलब्धि 'पूर्णता द्वय' ही है; अमानवीयता एवं वर्ग संघर्ष की सीमा में भय का अभाव नहीं; मनुष्य जीवन में भाक्ति वांछित उपलिब्ध है; योगाभ्यास जागृति के अर्थ में चरितार्थ होता है।

4. *ekuo&vuHko&n'ku*

- मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद मानव को अनुभवमूलक प्रणाली पद्धति पर ध्यान दिलाता है। अनुभवमूलक विधि से ही मानव प्रमाणित होता है तथा नित्य सत्य को बोध करता है।
- मानव सदैव शुभाकाँक्षा सम्पन्न है ही, नित्य शुभ के रूप में अनुभवमूलक अभिव्यक्ति सम्प्रषण का बोध कराता है।
- अनुभव ही एक मात्र तृप्ति स्थली है। अनुभवमूलक परम्परा ही अनुभवमूलक अभिव्यक्ति ही गरिमा महिमा होना सुस्पष्ट हो जाता है।
- अनुभव सर्वतोमुखी समाधान का स्रोत होने को स्पष्ट करता है।
- न्याय पूर्वक मानव परम्परा में जीते हुए सर्वतोमुखी समाधान को प्रमाणित करने की विधि विधान, कार्य व्यवहार, फल, परिणाम और प्रयोजनों को लय बद्ध विधि से बोध करा देता है।
- अतएव लोक संवाद में इस मुद्दे पर चर्चा सम्पन्न हो सकती है कि अनुभवमूलक विधि से जागृति प्रमाणित करना है या भ्रमित करना है।
- *ज्ञान ही व्यापक वस्तु है ऐसा ध्यान।*
- *बिन्दु मात्र में अनुभव, अन्तविहीन विस्तार।*
- *मानव एक धरती के लिए उपयोगी, अनेक धरती के लिए उपयोगी।*
- *मानव इस आकार मे आयेगा तो ही धरती स्वर्ग होगी।*
- *fo"k; oLrq %&*

2- *Lokoyacu d s ifr fo'okl d s fy , mRiknu xfrfof/k;k*

- कृषि, पशुपालन, खाद्य प्रसंस्करण, सिलाई–कढ़ाई, काष्ठ–कला, मिट्टी–कला आदि अन्य प्रैद्योगिकी आधारित आवर्तनशील उत्पादन गतिविधियां।
- उत्पादन गतिविधियां का चयन छात्राध्यापक के रुचि तथा स्थानीयता के आधार एवं आश्यकता के अनुसार किया जोगा।

3- *orZeku Mh-,M- ikB~;Øe dh leh{kkRed 0;k[;k*

1. *Kku] f'k{kkØe vkSj f{k.k'kkL=*

- ज्ञान और शिक्षा के संबंध के सवालों को समझने के लिए जिज्ञासा पैदा करना और उन पर समझ बनाना।
- ज्ञान और प्रकृति को समझना उनके सृजन निर्माण जांच और जीवन में स्थान के बारे में समझना।
- ज्ञान, शिक्षाक्रम और शिक्षा शास्त्र के बारे में छात्रों के मन में कोई व्यवस्थित विचार का बनना, जिससे वे इन सवालों पर अपना मत बना सकें।

2. *cky fodkl vkj lh[kuk*

- बच्चों के बचपन के बारे में आम धारणाओं की समीक्षा कर पायें।
- बच्चों के विकास के शारीरिक, संवेगात्मक, सामाजिक व बौद्धिक महलुओं को समझें।
- सीखना क्या है तथा हम कैसे सीखते हैं, इस पर विचार करें।
- बच्चों में सेचने की क्षमता का विकास कैसे होता है– सोचने की प्रक्रिया समझें।
- बालविकास संबंधित विभिन्न सिद्धांतों से परिचय पायें और शिक्षण कार्य में उनकी प्रासंगिकता को देख पायें।
- बच्चों का अध्ययन कैसे किया जाता है इसके तरीकों से पहचान बनायें।
- विभिन्न क्षमता व अभिरुचि वाले बच्चों के लिए कक्षा में कैसे जगह बनाएं यह समझें।

3. *'kkyk o lekt;*

- राज्य में व्याप्त सामाजिक व्यवस्था को समझना और उसके संदर्भ में शिक्षा व शाला की भूमिका को देख पाना।
- बहुलता व विविधता के संदर्भ में समावेशी शाला की भूमिका को समझना।
- समाज में व्याप्त जाति, धर्म व लिंग भेद के चलते संवैधानिक उद्देश्यों की पूर्ति में शाला की भूमिका को समझना।
- शिक्षा व समाज में संबंध देख पाना।
- विभिन्न समाजों में बच्चों की शिक्षा की विभिन्न व्यवस्थएं होती हैं इस बात को समझना।
- आधुनिक शाला का औद्योगिक व लोकतांत्रिक समाज के निर्माण में भूमिका देख पाना।
- आधुनिक शाला के समक्ष चुनौतियों को समझ पाना।
- क्या शाला समाज में व्याप्त भेदभावों को बरकरार रखने में मदद करता है?
- क्या शाला बच्चों की स्वतंत्रता व सृजनशीलता को नष्ट करके एक आज्ञाकारी नागरिक बनाता है?
- क्या शाला समुदाय की सांस्कृतिक विरासत का नकारकर एक कृत्रिम संस्कृति थोपता है?
- वैकल्पिक शाला की कल्पना करना।
- भारत में शाला का इतिहास व कल्पना।
- अंग्रेजों के आगमन से पहले शिक्षा की व्यवस्था समझना।
- अंग्रेजों के समय की शाला समझना।
- गांधी जी की बुनियादी शिक्षा (नई तालीम) की अवधारणा को समझना।
- कोठारी कमीशन की कल्पना को समझना।

- वर्तमान शाला व्यवस्था में विविधता – शासकीय, निजी, प्रायोगिक शालायें और उनमें विभेद को समझना।
- शाला को समुदाय से जोड़ने के अनुभवों की समीक्षा करना।
- पंचायती राज को जानना।
- पी.टी.ए. शाला विकास समिति आदि के अनुभव।
- पालक किन शर्तों पर शाला से जुड़ेंगे समझना।
- माताओं की विशंष भूमिका को समझना।

4. dyk f'k{kk

- छात्राध्यापकों को कला शिक्षण के कुछ बनियादी सिद्धांतों से परिचित कराना ताकि वह अपने छात्र–छात्राओं में कलात्मक प्रवृत्तियों को बढ़ावा दे सकें।
- छात्राध्यापकों की अपनी कलात्मक प्रवृत्तियों को उभारना ताकि कला के विभिन्न विधाओं के प्रति उसकी झिझक टूटे। चित्रकला, नाटक, मूर्तिकला– इनमें से किसी एक विधा में विशेष हुनर हासिल करें।
- छात्राध्यापकों को भारत तथा विश्व के कलात्मक धरोहरों से प्रारंभिक परिचय कराना ताकि वह उत्कृष्ट कलाकृतियों का रसास्वादन कर सके।
- छात्राध्यापकों को अपने ही परिवेश की सांस्कृतिक व सौन्दर्य के धरोहरों को पहचानने व रसास्वादन में मदद करना।
- छात्राध्यापकों की सृजनशीलता को नये आयाम देना– ताकि कबाड़ से या कचरे से सुन्दर चीजें बनाने, कक्षा या शाला को सौन्दर्यबोध के साथ सजाने आदि की ओर प्रेरित हों।

5. xf.kr ,oa xf.kr f'k{k.k

- छात्राध्यापक, गणित की प्रकृति तथा दैनिक जीवन में गणित की महत्ता एवं विशेषताओं को समझ सकें।
- छात्राध्यापक, गणितीय अवधारणाओं की समझ कैसे विकसित होती है, यह समझ सकेंगे।
- छात्राध्यापक, किसी बच्चे को तथा उसके शैक्षिक विकास के चरणों को समझ सकेंगे तथा यह तय कर पाएँगे कि प्रथमिक गणित की विभिन्न अवधारणाओं को किस स्तर पर, किस तरह से पढ़ाया जाए।
- बच्चे कैसे सीखते हैं तथा उनकी गणितीय सोच को विकसित करने के लिए कैसे उनकी मदद की जा सकती है, यह भी समझ सकेंगे।
- गणित सीखने में खेलों की भूमिका तथा सीखने में मदद करने वाले अन्य वैकल्पिक तरीकों को भी समझ सकेंगे।
- छात्राध्यापक, अवधारणाओं को सीखने की उपयुक्त रणनीति के साथ, संख्या की अवधारणा, स्थानीय मान, गणितीय संक्रियाएँ तथा स्थान संबंधी अवधारणाओं की विस्तृत रूप से समझ सकेंगे।
- यह भी समझ सकेंगे कि अवधारणाओं को सीखते समय हम जिन समस्याओं से जुझते हैं उन्हें समझने तथा उनके उपचार के तरीके क्या हैं।

6. Hkk"kk ,oa Hkk"kk f'k{k.k

- भाषा की इंसान के जीवन में भूमिका को समझ पाना।
- बच्चे भाष कैसे सीखते हैं? सीखने की प्रक्रिया को कौन–कौन से घटक प्रभावित करते हैं? भाषा सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका क्या है? इन बिन्दुओं पर समझ बनाना।
- भाषा के सामाजिक तथा राजनैतिक पहलुओं को समझना, यह समझना कि क्या–क्या इनके निहितार्थ हैं।
- भाषा के मूल्याँकन का उद्देश्य क्या होना चाहिए और मूल्यांकन करने का क्या तरीका होना चाहिए इस पर अपनी समझ बनाना।

pruk fodkl eY; f’k{kk vk/kkfjr

f} o"kh; fMIykek ikBØe

f}rh; o"k d v/;;u dh fo"k; oLr&

1- okn

1. *l ek/kkuRed Hkkfr dokn*

- शिक्षा में अथवा शिक्षा विधि में जीवन ज्ञान, सहअस्तित्व ज्ञान सम्पन्न शिक्षा रहेगी ही।

- संपूर्ण भौतिकता रसायन तंत्र में व्यक्त होते हुए संयुक्त रूप में विकास क्रम को सुस्पष्ट किये जाने का तौर तरीका और पूरकता रूपी प्रयोजनों को बोध कराया जाता है।
- परमाणु में विकास, परमाणु में प्रजातियां होने का अध्ययन पूरा कराता है।
- परमाणु विकसित होकर जीवन पद में सवंमित होता है दूसरी भाषा में विकसित परमाणु ही जीवन है।
- हर भौतिक परमाणु में श्रम, गति, परिणाम का होना समझ में आता है। जबकि गठनपूर्ण परमाणु (चैतन्य इकाई) परिणाम प्रवृत्ति से मुक्त होता है। दूसरी भाषा में जीवन परमाणु परिणाम के अमरत्व पद में होना पाया जाता है।
- अमरत्व की परिकल्पना प्राचीन काल से ही मन में रहते आयी है। इसे चिह्नित रूप में सार्थकता के अर्थ में अध्ययन करना कराना संभव नहीं हुआ था। सह–अस्तित्व विधि से यह संभव हो गया है।
- इस क्रम में जीवन के संपूर्ण क्रियाकलापों जैसे जीवन में जागृति, जागृति क्रम में जागृति का अध्ययन भली प्रकार से हो पाता है।
- जागृति में समाधान काउदय होने पर समाधानात्मक भौतिकवाद की सार्थकता समझ में आती है।
- भौतिकवाद को संघर्ष का आधार माना जाये या समाधान का। इस पर संवाद एक अच्छा कार्यक्रम है।
- *भौतिकता समाधान के अर्थ में ना कि द्वन्द या समस्या के अर्थ में।*
- *साथ में होने रहने के रूप में। साथ में होने रहने की स्थिति परमाणु अंश से है।*

2. *0;ogkjkRed tuokn*

- मानवीय शिक्षा में व्यवहारात्मक जनवाद प्रस्तुत हुआ है।
- इंगित सभी मुद्दों में सकारात्मक पक्ष को स्वीकारना है ऐसी मान्यता हमारी है।
- अध्ययन और संवाद के लिये प्रस्तुत है।
- *जागृत मानव के बारे में चर्चा करना।*
- *जागृत मानव कैसे सोचता है, कैसे चर्चा करता है, इसकी जनचर्चा करना।*

3. *vuHkokRed v/;kReokn*

- मानवीय शिक्षा में अनुभवात्मक अध्यत्मवाद को अध्ययन कराया जाता है, जिसमें अध्यात्म नाम की वस्तु को जानने, मानने, पहचानने की व्यवस्था है।
- सम्पूर्ण प्रकृति, दूसरी भाषा में सम्पूर्ण एक एक वस्तुएँ, तीसरी भाषा में जड़–चैतन्य प्रकृति, चौथी भाषा में भौतिक, रासायनिक और जीवन कार्यकलाप व्यापक वस्तु में सम्पृक्त विधि से नित्य क्रियाकलाप के रूप में वर्तमान है। इसे बोधगम्य कराते हैं यही सह–अस्तित्व का मूल स्वरूप है। इस मुद्दे को बोध कराना बन जाता है।

- बोध को प्रमाणित करने के क्रम में अनुभव होना सुस्पष्ट हो जाता है। जिससे अनुभवमूलक विधि से हर नर–नारी को जीने के लिए प्रवृत्ति उदय होती है।
- इस तथ्य के आधार पर संज्ञानशीलता को प्रमाणित करना संभव हो जाता है।
- संज्ञानशीलता अपने आप में सर्वतोमुखी समाधान होना पाया जाता है।
- अनुभवात्मक अध्यात्मवाद सर्वतोमुखी समाधान के स्रोत के रूप में अध्ययन विधा से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।
- संवाद के लिए उल्लेखनीय मुद्दा यही हैं– अनुभवमूलक विधि से जीना हैं या नहीं, समाधानपूर्वक जीना है या नहीं।
- *अस्तित्व, सह–अस्तित्व के रूप में है, इसको समझना।*

2- ’kkL=

1. *ekuo lapsrukoknh euksfoKku*

- मानवीय शिक्षा में मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान का अध्ययन करने कराने का प्रावधान है।
- मानव संचेतना को मानव संवेदनशीलता और संज्ञानशीलता के रूप में माना गया है।
- जिसके अध्ययन से संज्ञानशीलता पूर्वक जीने की विधि बन जाति है।
- संज्ञानशीलता पूर्वक जीने का तात्पर्य मानव लक्ष्य को सार्थक बनाना है।
- परम्परा के रूप में इसकी निरंतरता होना है।
- मानव की हैसियत को, मानसिकता को, अथवा जागृति मूलक मानसिकता को महसूस कराता है।
- साथ में जागृति की महिमा मानव परम्परा के लिए प्रेरणा देता है।
- क्योंकि मानव संज्ञानशीलता पूर्वक लक्ष्य मूलक विधि से जीना ही मानव परम्परा का वैभव है अर्थात् स्वराज और स्वतंत्रता है। इस तथ्य को भली प्रकार बोध कराते हैं।
- इसमें संवाद के लिए मुद्दा यही है मानव मूल्य मूलक विधि से जीना है या रुचिमूलक विधि से जीना है।
- *समस्त 122 आचरण को व्यक्त करना। जिसमें देव चेतना, दिव्य चेतना को व्यक्त करना, हम किसमें जीना चाहते हैं।*

2. *0;ogkjoknh lekt’kkL=*

- मानवीय शिक्षा क्रम में व्यवहारवादी समाजशास्त्र को अध्ययन कराया जाता है।
- जिसमें मानव मानव के साथ न्याय, समाधान, सह–अस्तित्व प्रमाणपूर्वक जीने के तथ्यों को बोध कराया जाता है।
- जिससे सह–अस्तित्व बोध, जीवन बोध सहित व्यवस्था में जीना सहज हो जाता है।

- इसमें संवाद का मुद्दा है, सह–अस्तित्व बोध सहित जीना है या केवल वस्तुओं को पहचानते हुए जीना है।
- *न्याय पूर्वक जीने का कसौटी और स्वरूप बताना।*
- *सत्य पूर्वक जीने का स्वरूप स्पष्ट होना।*
- *फलस्वरूप नियम, नियंत्रण, संतुलन पूर्वक जीना बनता है। स्पष्ट होता है।*

3. *vkorZu'khy vFkZfpUru*

- मानवीय शिक्षा में आवर्तनशील अर्थव्यवस्था को अध्ययन कराया जाता है।
- अर्थ की आवर्तनशीलता के मुद्दे पर यह बोध कराया जाता है कि श्रम ही मूल पूँजी है।
- प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन पूर्वक उपयोगिता मूल्य को स्थापित किया जाता है।
- उपयोगिता के आधार पर वस्तु मूल्यन होना पाया जाता है।
- इस विधि से हर व्यक्ति अपने परिवार में कोई न कोई चीज का उत्पादन करने वाला हो जाता है।
- इस ढंग से उत्पादन में हर व्यक्ति भागीदारी करने वाला हो जाता है।
- फलस्वरूप दरिद्रता व विपन्नता से और संग्रह सुविधा के चक्कर से मुक्त होकर समाधान समृद्धि पूर्वक जीने का अमृतमय स्थिति गति बन जाती है।
- इसमें जनसंवाद का मुद्दा यही है हम मानव परिवार में स्वायत्तता, स्वावलम्बन, समाधान, समृद्धि पूर्वक जीना है या पराधीन परवशता संग्रह सुविधा में जीना है।
- आवर्तनशील अर्थव्यवस्था में श्रम मूल्य का मूल्याँकनक रने की सुविधा हर जागृत मानव परिवार में होने के आधार पर वस्तुओं का आदान–प्रदान श्रम मूल्य के आधार पर सम्पन्न होना सुगम हो जाता है।
- इससे मुद्रा राक्षस से छूटने की अथवा मुक्ति पाने की विधि प्रमाणित हो जाती है। जिसमें शोषण मुक्ति निहित रहती है।
- अतएव संवाद का मुद्दा यही है कि लाभोन्मादी विधि से अर्थतंत्र को प्रतीक के आधार पर निर्वाह करना है या श्रम मूल्य के आधार पर वस्तुओं के आदान–प्रदान से समृद्ध रहना है।
- *धरती को घायल किये बिना, बरबाद किये बिना, अपराध एवं युद्ध किये बिना, धरती का अध्ययन की आवश्यकता और अपरिहार्यता स्पष्ट होना।*
- *फलस्वरूप मानव चेतना सहज जागृति पूर्वक मूक्त करना।*
- *शिक्षा अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था रूप में प्रबुद्धता, संप्रभुता और प्रभुसत्ता मानव परम्परा में ही प्रमाणित होने का अध्ययन है।*

3- vU;

1. *ekuoh; lfo/kku dk ik:i*

- *मानवीय व्यवस्था का स्वरूप स्पष्ट होना।*
- *निर्वाचन प्रक्रिया धन व्यय से मुक्त होना।*
- *लाभ–हानि मुक्त विनिमय क्रिया।*
- *पराधीनता के बिना स्वास्थ्य संयम क्रिया।*
- *बिना भेद–भाव उत्पादन क्रिया।*
- *आर्थिक व्यय से मुक्त उच्च शिक्षा।*

2. *ifjHkk"kk lfgrk*

-

4- *;kstuk*

1. *thou fo|k ;kstuk*

-

2. *ekuo lapsrukoknh f'k{kk&laLdkj ;kstuk*

-

3. *ifjokj ewyd LojkT; O;oLFkk ;kstuk*

-

Pksruk fodkl ewY; f'k{kk dh idk'k esa
f}o"khZ; fMIyksek dk;ZØe

– मूल्याँकन का स्वरूप

1- *Pksruk fodkl ewY; f'k{kk dh vuqlkj ewY;kadu dk vk'k;*

- हम मानव सुविधाजनक विधि से सुविधा के लिए मूल्याँकन करना चाहते हैं। सुविधा का मतलब भौतिक सुविधा न होकर मानसिक सुविधा से है। मानसिक सुविधा से तात्पर्य समाधान तक पहचान होना है। मनुष्य और समाधान, मनुष्य और न्याय, मनुष्य और नियंत्रण, मनुष्य और मानव लक्ष्य के आधारों पर मूल्याँकन होता है।
- इस मूल्याँकन का आधार मानव लक्ष्य को पहचाना जाता है। इसी में मानव लक्ष्य के आधार पर होना, बाकी विधाएँ उसमें समा जाती हैं।
- मानव का जाँच समझदारी से व्यवस्था में जीना, समग्र व्यवस्था में भागीदारी करना, उसके फल परिणाम समझदारी जाँच पाना, यही मूल्याँकन विधि है, ऐसा मूल्याँकन हर मानव की अपेक्षा है।
- इसी के साथ हर वस्तुओं का मूल्याँकन उपयोगिता के आधार पर कर पाना यही सम्पूर्ण मूल्याँकन का तात्पर्य है।

- समाज में मूल्यॉंकन एक सहज धारा है क्योंकि मानव परम्परा में एकता और अखण्डता का ओतप्रोत प्रमाण और व्याख्या है। व्यख्या के निचोड़ में मूल्यॉंकन स्वरूप बन जाती है।

- सार रूप में मूल्यॉंकन हर मानव को स्वीकार होता है इसलिए मानव की परस्परता में मूल्यॉंकन एक अनुपम कार्यक्रम है।

2- *iLrkfor eY;kdu dk l)kfUrd vk/kkj*

- व्यवहार कार्यों को मूल्य, चरित्र और नैतिकता का पूरक विधि से सम्पन्न होना देखा गया है। यही मानवीयतापूर्ण आचरण का वैभव है और प्रमाण है।

- व्यवहार में न्यायपूर्वक नियमों का, व्यवस्था में नियमपूर्वक न्याय का अनुबंधित रहना दिखाई पड़ती है।

- हर सम्बन्धों में मूल्य, मूल्यॉंकन, उभयतृप्ति यह न्याय का स्वरूप है। इसके समर्थन में अथवा इसके पूरकता में नियम के रूप में तन, मन, धन, रूपी अर्थ का सदुपयोग–सुरक्षा प्रमाणित होती है। इनके पूरकता में स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य–व्यवहार सम्पन्न होना देखा गया है। मूल्यॉंकन का यह आधार बिन्दु है।

- दूसरा आधार बिन्दु मानव अपने परिभाषा के अनुरूप 'त्व' सहित व्यवस्था में जीने की कला को प्रमाणित करता है। यही समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व के रूप में तृप्ति का स्रोत और गति अनुस्यूत रूप में बना ही रहता है।

3- *iLrkfor eY;kdu dk Lo:Ik vkj ifØ;k*

- स्वायत्त मानव लक्ष्य के अर्थ में, जो जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन मूलक विवेक और विज्ञान विधि सहित शिक्षा कार्य सम्पन्न हुआ रहता है उससे विद्यार्थी अपना मूल्यॉंकन स्वयं करेंगे।

- हर कक्षा में विद्यार्थी अपना मूल्यॉंकन स्वयं करने की परम्परा होगी। हर विद्यार्थी स्व निरीक्षण पूर्वक ही अपना मूल्यॉंकन स्वयं करेगा।

- वस्तु के रूप में कहाँ तक जानना, मानना, पहचानना परिपूर्ण हो चुका है, निर्वाह करने में जिन–जिन विधाओं में सम्बन्धों में पारंगत हुए रहते हैं, इसका सत्यापन करना ही मूल्यॉंकन प्रणाली रहेगी।

4- *iLrkfor eY;kdu dk {k= ,o vk;ke*

1- *ekuo d thu d vk;ke vFkkr 0;oLFkk e Hkkxhnkjh d vk/kkj ij*

- शिक्षा संस्कार
- स्वास्थ्य संयम
- न्याय सुरक्षा
- उत्पादन कार्य
- विनिमय कोष

2- *ekuo d thu d iek.k d vk/kkj ij*

- कार्य
- व्यवहार

- विचार
- अनुभव

3- *ekuo d iks=rk] {kerk] ;kX;rkulkj Lo;a dh i;ktu'khyrk] ijdrk d vk/kkj ij lR;kiu*

- प्रमाणित
- प्रेरक
- समझने की आवश्यकता है

5- *eY;kdu dh le; lkfj.kh o vfHkys[khdj.k*

1- *lkIrkfgd*

- जीने के प्रमाण के आधार पर

2- *ekfld*

- जीने के प्रमाण के आधार पर
- जीने के आयाम के आधार पर

3- *=Sekfld*

- जीने के प्रमाण के आधार पर
- जीने के आयाम के आधार पर
- सत्यापन

4- *v)Z okf"kZd*

- उत्सव पूर्वक सत्यापन
- आवर्तनशील उत्पादन का प्रदर्शन

5- *okf"kZd*

- समारोह/उत्सव पूर्वक सत्यापन
- आवर्तनशील उत्पादन का प्रदर्शन

6- *vfHkys[khdj.k*

- छात्राध्यापक अपना मूल्याँकन/सत्यापन लिखित देंगे, जिसका संकलन उनके व्यक्तिगत फाईल में किया जायेगा।
- छात्राध्यापक प्रत्येक मूल्याँकन के पश्चात् स्वयं की पूर्णता के अर्थ में स्थिति–गति का पूर्व के मूल्याँकनों का अध्ययन कर उल्लेख करेंगे उनके।
- मूल्याँकन/सत्यापन उनके प्राध्यापकों के साक्षी में होगा।

- उत्सव/समारोपूर्वक मूल्याँकन के समय छात्राध्यापकों के बन्धु, बान्धव, परिवारजन और अन्य श्रेष्ठजन उपस्थित रहेंगे।

6-